ईमान क्या है?

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

हजरत उमर (रदी) से रिवायत है कि आने वाले शख्स ने (जो हकीकत मे जिबरील अल थे और रसूलुल्लाहﷺ के पास इंसानी शक्ल मे आये थे) रसूलुल्लाहﷺ से पूछा कि बताये ईमान क्या है? आपने फरमाया, ईमान ये है कि तुम अल्लाह को उसके फरिश्तों को उसकी भेजी हुवी किताबों को, उसके रसूलों को, और आखीरत को हक जानो और हक मानो, और इस बात को भी स्वीकार करो कि दुनिया मे जो कुछ भी होता है अल्लाह की तरफ से होता है चाहे वह भलाई हो या बुराई. ये एक लम्बी हदीस का टुकडा है जो हदीसे जिबरील के नाम से मशहूर है और उसका खुलासा ये है कि हजरत जिबरील अल एक दिन रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत मे इंसानी शक्ल मे आये और इस्लाम, ईमान, एहसान और कयामत के बारे मे प्रश्न किये, आपने सबके उत्तर दिये उनमे से ईमान के बारे

मे सवाल और जवाब यहा लिखे गये है.

तशरीह: ईमान का असल मतलब है किसी पर भरोसा करना और उसकी वजह से उसकी बातों को सच मानना, जब आदमी को किसी की सच्चाई का यकीन होता है तब ही उसकी बात को मानता है, ईमान की असल रूह यही भरोसा और यकीन है और आदमी के मोमिन होने के लिये जरूरी है कि इन तमाम बातों को हक मान कर कुबूल करे जो अल्लाह की तरफ से रसूलों के जरिये आती है, उनमे से बुनियादी इमानियात का जिकर इस हदीस मे आया है.

उनकी अलग-अलग मुखतसर तशरीह ये है.

1] अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब क्या है?

ईमान बिल्लाह, यानी अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब ये है कि उसको हमेशा से मौजूद माना जाये, उसको संसार का पैदा करने वाला और संसार का अकेला प्रबंध करने वाला माना जाये, और इस बात को स्वीकार किया जाये कि उसका कोई साझी और शरीक नही न दुनिया को पैदा करने मे और न दुनिया का कानून चलाने मे, और माना जाये कि हर तरह के

ऐब और हर किस्म की कमी से उसकी जात पाक है, और वह तमाम अच्छी सिफतों (आदतों) का मालिक और तमाम खूबियों वाला है.

1a] फरिश्तों पर ईमान लाने का मतलब क्या है?

फरिश्तों पर ईमान लाने का मतलब ये है कि उनके वजूद को माना जाये और यकीन किया जाये कि वह पवित्र लोग है, वह अल्लाह की नाफरमानी नही करते, हर वकत अल्लाह की इबादत (पूजा) मे लगे रहते है. वफादार गुलाम की तरह मालिक का हर हुक्म को पूरा करने के लिये हाथ बांधे उसके सामने खडे रहते है, दुनिया मे नेक काम करने वालों के लिये दुवाये करते है.

2] रसूलो पर ईमान लाने का क्या मतलब?

रसूलों पर ईमान लाने का मतलब ये है कि जितने रसूल अल्लाह की तरफ से आये सब सच्चे है, उन सब रसूलों ने बगैर किसी कमी बेशी के अल्लाह की बातें लोगों तक पहुंचाई इस सिलसिले की आखिरी कडी रसूलुल्लाहﷺ है अब इन्सानो की निजात सिर्फ आपﷺ के बताये हुये रास्ते पर चलने मे है.

3] किताबो (कुरान) पर ईमान लाने का क्या मतलब?

किताबों पर ईमान लाने का मतलब ये है कि अल्लाह पाक ने अपने रसूलों के जरिये इन्सानो की जरूरत के मुताबिक जो हिदायतनामे भेजे सब को सच्चा माने, उनमे आखिरी हिदायत-नामा कुरान मजीद है. अगली कौमों ने अपनी किताबें बिगाड डाली, तब आखीर मे अल्लाह ने अपने रसूलुल्लाहﷺ के जरिये आखरी किताब भेजी जो साफ और स्पष्ट है, जिस मे कोई कमी नही, और जो हर तरह के बिगाड से सुरक्षित है, और अब इस किताब के सिवा दुनिया मे कोई ऐसी किताब नही जिस के जरिये अल्लाह तक पहुंच सकते हो.

4] तकदीर पर ईमान लाने का मतलब क्या है?

तकदीर पर ईमान लाने का मतलब ये है कि इस बात को माना जाये कि दुनिया मे जो कुछ भी हो रहा है, अल्लाह के हुक्म से हो रहा है यहा सिर्फ उसी का हुक्म चलता है, ऐसा नही है कि वह तो कुछ और चाहता हो और दुनिया का कारखाना किसी और ढब पर चल रहा हो, हर भलाई और बुराई हिदायत व

गुमराही का एक कानून है जिस को उसने पहले से बना दिया है. अल्लाह का शुक्र अदा करने वाले बन्दो पर जो मुसीबतें आती है जिन कठनायो का सामना करना पडता है और जो आजमाइशे उनपर आती है, ये सब हालात और उनके रब के हुक्म और पहले से तैय किये हुये कानून के मुताबिक है.

5] आखिरत पर ईमान लाने का मतलब क्या है?

आखीरत पर ईमान लाने का मतलब ये है कि आदमी इस हकीकत को कुबूल करे कि एक ऐसा दिन आने वाला है जिस मे इन्सानो की जिन्दगी के पूरे रिकार्ड की जांच पडताल होगी, तो जिसके करम ठीक होंगे वह इनाम पायेगा, और जिसके करम ठीक नही होंगे वह सजा पायेगा. सजा कितनी होगी और इनाम कितना मिलेगा इसको बताया नही जा सकता.

[मुस्लिम अन उमर बिन खत्ताब रदी, रिवायत के एक हिस्से का खुलासा]

[इन 5 टॉपिक की डिटेल अलग-अलग PDF के आर्टिकल मे आयेंगी]